DOI: 10.51220/hjssh.v6i1.15

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 6 pp.101 - 104, December, 2011, ISSN. 0975 - 9891

उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध सिद्धपीठ और शक्तिपीठ

राखी उपाध्याय

हिन्दी विभाग, डी0ए0वी0 (पी0जी0) कॉलेज, देहरादून

E-mail : drrakhi_418@rediffmail.com

Received:22-9-2010 **Revised:27-4-2011** **Accepted:28-6-2011**

ABSTRACT

भारत के उत्तर दिशा में देव तुल्य हिमालय विराजमान हैं। पूरब और पश्चिम में समुद्र का अवगाहन करता यह पृथ्वी के मानदण्ड की भाँति स्थित है। हिमालय की गोद में स्थित उत्तराखण्ड अनन्तकाल से भारतवासियों की पुण्यभूमि रहा है। धर्म ग्रन्थों में इसे देवताओं तथा मनीषियों की आवास स्थली कहा गया है। यह प्रदेश जहाँ एक तरु अद्वितीय प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण अति प्राचीनकाल से देव, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर आदि देव जातियों की क्रीड़ास्थली रहा है। अपनी पावनता के कारण ऋषियों एवं मुनियों की तपोभूमि रहा है।

उत्तराखण्ड में जिन सिद्धपीठों को व्यापक मान्यता प्राप्त है वे हैं-1.कालीमठ, 2.कुंजापुरी, 3.चन्द्रबदनी, 4.ज्वाल्पादेवी, 5.धारीदेवी, 6.पूर्णागिरि, 7.सुरकंडा देवी, 8.हरियाली देवी, 9.हाटकालिका आदि।

Key-words:-उत्तराखण्ड, सिद्धपीठ, शक्तिपीठ

प्रस्तावना

भारत के उत्तर दिशा में देव तुल्य हिमालय विराजमान हैं। पूरब और पश्चिम में समुद्र का अवगाहन करता यह पृथ्वी के मानदण्ड की भाँति स्थित है। हिमालय की गोद में स्थित उत्तराखण्ड अनन्तकाल से भारतवासियों की पुण्य भूमि रहा है। धर्म ग्रन्थों में इसे देवताओं तथा मनीषियों की आवास स्थली कहा गया है। उत्तराखण्ड में उच्च, निम्न और उपहिमालय क्षेत्र सम्मिलित हैं और यह अक्षान्तर 29.5'-31.5' उत्तर और देशान्तर 77.45'-81.00' पूर्व के बीच स्थित है। उत्तराखण्ड लगभग 300 किलोमीटर लम्बा और 150 किलोमीटर के लगभग है। स्कन्दपुराण में उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र को केदारखण्ड और कुमाऊँ क्षेत्र को मानसखण्ड कहा गया है। प्रकृति की गोद में पलने वाला भोला-भाला मानव जब किसी अद्भुत या चमत्कारपूर्ण दृश्य या शक्ति को देखता है तो वह उसकी आलौकिकता से अविभूत होकर उसे दिव्यत्व की संज्ञा दे देता है तथा उससे सम्भाव्य हानि या लाभ की भावना से प्रभावित होकर उसके चमत्कारी, मंगलकामना कर सकने से समर्थ शक्ति के समक्ष नतमस्तक हो जाता है। इसी 'देवभावना' के मूल में अन्तर्निहित मानव का मन का दौर्बल्य स्थित है। यहाँ की देवभावना इतनी प्रबल और व्यापक है कि इस समस्त प्रदेश को ही 'देवभूमि' का नाम दिया जाता है। यह प्रदेश जहाँ एक तरु अद्वितीय प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण अति प्राचीनकाल से देव, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर आदि देव जातियों की

©SHARAD

क्रीड़ास्थली रहा है। अपनी पावनता के कारण ऋषियों एवं मुनियों की तपोभूमि रहा है, वहीं दूसरी और असंख्य लोक देवताओं की आराधना स्थली भी रहा है। यहाँ सभी लोग किसी न किसी रूप में माँ शक्ति की पूजा करते हैं। उसकी पूजा जौनपुर में सुरकंडा देवी, देवलगढ़ में राज राजेश्वरी, अल्मोड़ा में नन्दा देवी, कालीमठ में काली देवी, तिलवाड़ा में मैठाणादेवी, कलियासौड़ में धारी देवी, श्रीनगर में कंसमदेवी, देवलगाँव में भुवनेश्वरी, कफोलस्यूं में ज्वाल्पा देवी और कंडरगाँव में झालीमाली के रूप में होती है। अल्मोड़ा की कछार देवी, बनानी देवी और जाखण देवी और नैनीताल में पाखाण देवी भी प्रसिद्ध मातृ शक्तियाँ हैं।

सिद्धपीठों की गणना भी तीर्थों के अन्तर्गत की जानी चाहिए, ये पीठ हमारी गहन आस्था के केन्द्र रहे हैं, उत्तराखण्ड में जिन सिद्धपीठों को व्यापक मान्यता प्राप्त है वे हैं-1.कालीमठ, 2.कुंजापुरी, 3.चन्द्रबदनी, 4.ज्वाल्पादेवी, 5.धारीदेवी, 6.पूर्णागिरि, 7.सुरकंडा देवी, 8.हरियाली देवी, 9.हाटकालिका आदि।

1.कालीमठ-ऋषिकेश से 214 कि0मी0 की दूरी पर गुप्तकाशी के पास स्थित है, कालीमठ गढ़वाल हिमालय का बहुत ही मान्य सिद्धपीठ है। लगभग 4000 फीट की ऊँचाई पर चौखम्बा क्षेत्र में मन्दाकिनी एवं सरस्वती नदियों के तट पर स्थित इस छोटे से सुरम्य स्थल पर महाकाली, सरस्वती, कालीश्वर, महादेव, सिद्धेश्वर महादेव, भैरवनाथ, अघोरकाली के मन्दिर हैं। महाकाली के मुख्य मन्दिर में सदैव जलते रहने वाला अग्निकुण्ड है, इस मन्दिर में माँ काली की ऐसी कोई मूर्ति प्रचलित नहीं है जिसके दर्शन किए जाते हो, अपितु एक कुड़ी है जिसके ऊपर चाँदी की चकोर शिला रखी गई है, श्रद्धालु इसी की पूजा करते हैं, यहाँ नवरात्रि के दिनों में बहुत भीड़ रहती है स्थान कालीमठ के निकट कविठा नामक गाँव माना जाता है, ऐसा माना जाता है कि कालीदास इसी सिद्धपीठ कालीमठ में पुजारी थे, कालीमठ मन्दिर से हट कर बने प्राचीन मन्दिरों में सिद्धपीठ के बारे में जानकारी देने वाली एक अच्छी पुस्तक धर्मानन्द उनियाल ने लिखी हैं।

2.कुँजापुरी-कुँजापुरी देव का मन्दिर ऋषिकेश से 27 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, मन्दिर एक चोटी पर स्थित है जो समुद्रतल से 1645 मी. की ऊँचाई पर है, यह एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ है जिसके बारे में यह आस्था है कि सती को अंगों में कुँज नामक अस्थि-अंश इसी स्थान पर गिरा था। इस स्थान पर दुर्गाष्ठमी को विशाल मेला लगता है जिसमें यहाँ विविधतामयी, लोक संस्कृति के दर्शन होते हैं। यह मेला एक सप्ताह तक चलता है। आसपास तथा दूर-दराज के हजारों श्रद्धालु इस मेले में हिस्सा लेते हैं। कुँजापुरी की चोटी पवित्र देवी दर्शन कहलाती है। जहाँ से हिमालय का बहुत ही मनोरम दृश्य दिखायी देता है।

3.चन्द्रबदनी-चन्द्रबदनी देवी का मन्दिर देवप्रयाग-टिहरी मार्ग पर 21 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह जनपद टिहरी में देवी का एक अनूठा मन्दिर है। यह प्राचीन मन्दिर अपार श्रद्धा का केन्द्र है। चन्द्रकूट पर्वत पर एकदम चोटी पर, समुद्रतल से 2756 मीटर की ऊँचाई पर बने इस प्राचीन मन्दिर का अब नवीनीकरण एवं सौन्दर्यीकरण हो गया है। इस मन्दिर का वर्णन देवी भागवत में किया गया है। कहा जाता है कि सती का बदन इसी चन्द्रकूट पर्वत पर गिरा था। चन्द्रबदनी शक्तिपीठ जैसा कि नाम से स्पष्ट है चन्द्रमा के से मुख वाली देवी का द्योतक है। लेकिन इस मन्दिर में देवी के दर्शन नहीं किए जाते हैं। वे रक्तवर्ण के वस्त्र के

पीछे ओट में रहती हैं। यहाँ पूजा मात्र श्री यंत्र की होती है। इस शक्तिपीठ में उमा-नरेश की दो अत्यन्त उल्लेखनीय प्रतिमाएँ हैं सकल कामनाओं की पूर्ति करने वाली इस देवी के मन्दिर पर कभी पशुबलि प्रथा थी किन्तु अब नहीं है। इससे वातावरण साफ एवं पवित्र हो गया है। यूँ भी इस मन्दिर से पार्श्व में सामने देखे तो हिमाच्छादित पर्वत शृंखलाएँ मुक्त हास करती दृष्टिगत होती हैं। प्रकृति का बहुत ही सुरम्य, निष्कलुष और आत्मा को विस्तार देने वाला परिदृश्य इस मन्दिर क्षेत्र को दिव्यता सौंपता है।

4.ज्वालपादेवी-यह सिद्धपीठ पौड़ी-कोटद्वार मार्ग पर पूर्वी नयार नदी तट पर स्थित है। इस स्थान पर दैत्यराज पुलोम की कन्या शची ने देवराज इन्द्र को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए हिमालय की अधिष्ठात्री देवी पार्वती की आराधना की थी। शाची की तपस्या से प्रसन्न होकर पार्वती ने दीप्यमान दीपवालेश्वरी के रूप में दर्शन देकर उसकी मनोकामना पूर्ण करने का वदान दिया था। माँ पार्वती का जो प्रकाशमय रूप प्रकट हुआ उसे स्कन्दपुराण में दीप्तजालेश्वरी कहा गया है। यह दीप्तजालेश्वरी नाम की जनसामान्य की बोली में ज्वाल्पादेवी हो गया, इस मन्दिर में अखण्ड ज्योति प्रज्जवलित रहती है।

5.धारी देवी-श्रीनगर-बदरीनाथ मुख्य मार्ग पर 14 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ से एक कि.मी. नीचे उतर कर अलकनंदा के पावन तट पर कुछ ऊँचाई पर बना है धारी देवी मन्दिर। यह एक मान्य शक्तिपीठ व सिद्धपीठ है। इस छोटे से मन्दिर में देवी माँ की श्यामवर्ण की तीन पाषण प्रतिमाएँ हैं किन्तु मुख्य प्रतिमा बहुत ही आकर्षक है। सौम्य मुख मुद्रावली इस मूर्ति के भाव दिन में तीन बार बदल जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि प्रात: काल बालरूप, मध्याह्न में युवा रूप और सांयकाल में माँ के चेहरे पर वृद्धारूप दिखायी देता है।

6. पूर्णागिरि देवी-उधमसिंहनगर जिले में स्थित पूर्णागिरि का मन्दिर एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ है। यह मन्दिर भारत-नेपाल सीमा पर काली नदी के तट पर एक ऊँचे पर्वत शिखर पर टनकपुर से 21 कि.मी. की दूरी पर है। वर्षभर यहाँ यात्रा चलती रहती है, लेकिन प्रतिवर्ष पौष मास में विशेष रूप से समस्त पर्वतवासी दूर-दूर से माँ के दर्शन करने आते हैं। उतुंग पर्वत शिखर पर तिरछे अड़े हुए एक विशाल पत्थर की दरार में अत्यन्त विकट है। सघन वन व कड़ी चढ़ाई का रास्ता। ऐसा विश्वास है कि रात्री में माँ काली सिंह पर सवार होकर इस क्षेत्र में विचरण करती है।

7. सुरकंडा देवी-यह मन्दिर चम्बा-मसूरी मार्ग पर स्थित है, जा कि जनपद टिहरी गढ़वाल में है। मुख्य मार्ग पर कद्दूशखाल है जहाँ से मन्दिर की दूरी 2 कि.मी. कठिन चढ़ाई के बाद स्थित है। समुद्रतल से मन्दिर की ऊँचाई 3030 फीट है। सुरकंडा नाम इस स्थान को कैसे मिला? इसका उत्तर वक्षप्रजापति, सती और शिव के उसी पौराणिक आख्यान में मिलता है जिसमें विदग्ध शिव सती के शव को लिए तीनों लोकों में घुमते रहे। माना जाता है कि यहाँ सती का सिर गिरा था। इसलिए इस स्थान को सुरकंडा कहा जाता है, यहाँ पर इन्द्र ने भी तपस्या करी थी। सुरकंडा मन्दिर अपने प्राकृतिक परिवेश के कारण भी यात्रियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ से त्रिशूल, पर्वत, चौखम्बा, नन्दादेवी, गौरी शंकर आदि हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियाँ अपने मनोहारी रूप में दिखायी देती हैं। सर्दियों में यहाँ काफी बर्फ गिरती है।

८. **हरियाली देवी**-यह एक प्रसिद्ध सिद्धपीठ है जो बदरीनाथ मार्ग पर रूद्रप्रयाग और गोचर के बीच नगरासू गाँव से 25 कि.मी. दूरी पर है। समुद्रतल से इसकी ऊँचाई 1371 मीटर है। साधारण सा दिखने वाला मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है, जिसे त्रिपुर बाला सुन्दरी का माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि जब महामाया ने देवकी की साँतवी सन्तान के रूप में जन्म लिया तो कंस ने उसे पृथ्वी पर पटक दिया। महामाया के शरीर के विभिन्न अंगों में से उसका हाथ यहाँ गिरा था। देवी माँ के इस मन्दिर के बारे में यह प्रचलित है कि जब शंकराचार्य बदरीनाथ की ओर जा रहे थे तो अचानक उनका स्वास्थ बिगड़ गया। देवी ने उनसे स्वप्न में कहा कि तुम मेरे दर्शन किए बना आगे नहीं जा सकते। शंकराचार्य ने आकर देवी के दर्शन किए और पूजा की। वे स्वस्थ हो गए और आगे की यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न की। माँ हरियाली देवी के मन्दिर में मुख्य रूप से तीन प्रतिमाएँ हैं-माँ हरियाली एवं वैष्णव देवी के रूप में भी की जाती है।

9. **हाट-कालिका**-कुमाऊँ में यों तो काली के अठारह मन्दिर हैं किन्तु इनमें सर्वाधिक मान्यता गंगोली की हाट कालिका को प्राप्त है। गंगोलीहाट से एक कि.मी. की दूरी पर मन्दिर स्थित है। यह प्राचीन मन्दिर देवदार के सुरम्य जंगल में बना है। मन्दिर में माँ काली की 3 फीट ऊँची प्रतिमा है, जो बहुमूल्य काले संगमरमर की बनी है। मन्दिर के पास महिशासुर मर्दिनी देवी की सिद्धपीठ है जो प्रत्यक्ष फलदात्री तथा मनोकामनापूर्ण करने वाली मानी जाती है।

आभार

मैं विश्वविद्यालय अनुसंधान आयोग की हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने अनुसंधान कार्य हेतु वित्तीय सहयोग प्रदान किया। साथ ही डॉ0 जे0वी0एस0 रौथान, एसोसिएट प्रोफेसर, जन्तु विज्ञान विभाग, डी0ए0वी0 (पी0जी0) कॉलेज, देहरादून की भी आभारी हूँ जिनके सहयोग से यह लेख सम्पन्न हो सका।

सन्दर्भ

1. उत्तराँचल: ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक आयाम, उमा प्रसाद थपलियाल
2. उत्तराखण्ड के लोक देवता, डी0 डी0 शर्मा
3. उत्तराखण्ड ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भूगोल, डॉ0 शिव प्रसाद नैथानी, मोहन नैथानी
4. गढ़वाली लोकगीत विविध-डॉ0 गोविन्द चातक
5. लोक साहित्य का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ0 श्रीराम शर्मा